

प्रेमियों का समाज और उनका लीला-चिन्तन

जब बसन्तऋतु आती है झौर-झौर आम के बोर अपना सौरभ दिग्-दिगन्त में फैलाते हैं, फूलों की कलियाँ विकसित होती हैं, सारी प्रकृति में अपूर्व रस, मादक सुगन्ध फैल जाती है-तब वह किसी के छिपाये छिपती नहीं है । न भँवरों को मधुपान का निमन्त्रण देना पड़ता है और न तो कोयल को 'कुहु-कुहु' के संगीत गाने का । सब सुयोग अपने आप ही एकत्र हो जाते हैं । मिठले बाबलसाईं द्वारका से लौटकर मीरपुर आ गये । उनके हृदय को प्याला प्रेम से लबालब भरकर आँखों के रास्ते छलक रहा था । उनके आसपास आनेवाले, उनका दर्शन करनेवाले एक ऐसा सुख, एक ऐसा स्वाद, एक ऐसा नशा अनुभव करते कि उन्हें छोड़कर हटना ही नहीं चाहते । जैसे खिले हुए कमल के आसपास भौरे मँडराते रहते हैं इसी प्रकार झुण्ड के झुण्ड सत्संगी भक्तकोकिलजी के चारों ओर मँडराने लगे ।

भगवद्भक्ति भी गुप्त रखने की वस्तु है, जैसे कोई अमूल्य निधि हो । परन्तु इसे गुप्त कब तक रखा जा सकता है-जबतक अपनी याद हो । जब भक्त के हृदय समुद्र में भावावेश का ज्वार आता है तब उसकी लहरियाँ अपने आप ही उछल-उछलकर तटभूमि को प्लावित करने लगती हैं । यह भी एक भगवान् की मौज है, यह भी उनका एक मनोरंजन है । यदि भक्तों के द्वारा

भगवान् अपनी भक्ति-सुधा-सीकर की वर्षा न करते, उसके प्रेम के प्याले को कभी-कभी छलका न देते तो जगत में फँसे हुए जीवों को भक्तिरस में नमूने का भी पता नहीं चलता । भक्ति के आनन्द में भक्त का हृदय फट न जाय इसके लिये भी उसका बाहर प्रवाहित होना आवश्यक रहता है और स्वयं भगवान् ही इसका ध्यान रखते हैं । श्रीभक्तकोकिलजी के भक्तिमय संगीत की 'कुहू' ध्वनि से मीरपुर और पास पड़ोस के बहुत दूर तक के गांवों में रहनेवाले सज्जनों का हृदय मुखरित हो उठा । घर-घर में ठाकुर की पूजा, जन-जन के मुख में नाम-ध्वनि । जिन लोगों ने कभी भगवद् गुणानुवाद, भगवन्नाम तक नहीं सुना था, वे ही अब अश्रुपूरित नेत्र, पुलकावलीमण्डित शरीर और गद्गद् हृदय से भगवन्नाम की ध्वनि करने लगे ।

नित्य सत्संग नाम-ध्वनि और भजन-स्मरण के सिवा एक विशेष कार्यक्रम भी था । गुरुवार के दिन तो जैसे आनन्द की बाढ़ ही आ जाती । सभी प्रेमी भक्ति-रस के आनन्द में छक जाते, प्रेमानन्द में लोट-पोट होने लगते । उस दिन सब लोग एकान्त अनुराग में अलग अलग बैठते और श्रीकोकिल साई की कृपा से अपने-अपने भाव के अनुसार प्रभु की अद्भुत लीलाओं का अनुभव करते । कभी करुण में, कभी हास्य में, कभी श्रृंगार में, कभी शान्त में । कभी-कभी दस-पाँच इकट्ठे होकर अलग बैठ जाते और भगवान् की लीला-कथा को आनन्द लेते । कभी दरबार में, कभी श्रीरामबाग में । कभी मीरपुर से बाहर जाते तो वहाँ भी

ऐसा ही करते । सब लोग अलग-अलग लीला स्मरण करने के अन्तर एकान्त में विराजमान श्रीभक्तकोकिलजी के पास बैठ जाते और अपने-अपने अनुभव सुनाते । सब सत्संगी सबके अनुभव सुनकर विशेष आनन्द में मग्न हो जाते ।

रात्रि के समय सबलोग मिलजुलकर प्रेम और आनन्द में मग्न होकर बड़े ऊँचे स्वर से भगवन्नाम की ध्वनि करते । जिससे कई मील तक वह प्रान्त गूँज उठता ।

आज गुरुवार है । श्रीभक्तकोकिलजी मीरपुर के श्रीराम बाग में जो आम, अंजीर, कचनार, शहतूत, पलाश आदि वृक्षों से हरा-भरा, फूलों से रंग-बिरंगा और फलों से झुका हुआ है, राय-बेल, सोनजुही, चमेली और कुन्दों के सौन्दर्य एवं सौरभ से मण्डित एवं भ्रमरों के द्वारा मुखरित है, एक सघन सुन्दर साँवले तमाल वृक्ष की छाया में विराजित है और दूसरे प्रेमी सत्संगी छोटे-छोटे झुण्ड के रूप में इकट्ठे होकर आपस में प्रभु की लीला-कथा कर रहे हैं । किसी के नेत्रों में प्रेमाश्रुओं की झड़ी लग रही है, कोई मधुर-मधुर चीत्कार कर रहा है, कोई व्याकुलता से पृथ्वी पर लोट रहा है, कोई प्रलाप कर रहा है, कोई हा राम !

हा राम ! कोई अचेत पड़ा है, कोई अपने भावराज्य में मग्न होकर शरीर की सुधि भूल रहा है । मधुर-मिलन का प्रसंग आने पर हर्षोल्लास से गद्गद् होकर सभी “जय-जय” की ध्वनि करने लगे ।

सांयकाल का समय है, एक ऊँचे स्थानपर सुन्दर आसन पर भक्तों के भगवान् विराजमान हैं । भगवान् के पास ही एक ओर श्रीभक्तकोकिलजी विराजमान हैं और पास एक गुलदस्ता और तुलसी का गमला रखा हुआ है । श्रीभक्तकोकिलजी उन्हीं को अपने दृष्टिबिन्दु का केन्द्र बनाकर भगवान् की अलौकिक लीलाओं का दर्शन कर आनन्द-मग्न हो रहे हैं । चारों ओर सत्संगीजन बैठे हुए हैं । प्रत्येक गुरुवार के समान ही सत्संगियों ने अपने आज के अनुभव सुनाना प्रारम्भ किया ।